Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 21/August/2023 IJRAW: 2023; 2(9):134-135 Accepted: 28/September/2023

सातवीं शताब्दी में विक्रमशिला विश्वविद्यालय के अध्ययन के संदर्भ में

*[1]डॉ0 अनिल कुमार यादव

*[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास, संस्कृति, पुरातत्व विभाग पी0जी0 कालेज, पट्टी, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य विक्रमशिला विश्वविद्यालय के सन्दर्भ में जानकारी देना है। जिसके अन्तर्गत विश्वविद्यालय के विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि एवं आचार्यों का विश्लेषण करना है। सातवीं शताब्दी में इस विश्वविद्यालय में विदेशों से विद्यार्थियों का अध्ययन के लिए अनवरत आवागमन लगा रहता था। इसलिए इसका महत्व बहुत बढ़ गया था और एम0ए0 के छात्रों के लिए इस विश्वविद्यालय को जानना या समझना जरूरी है।

मूल शब्दः विक्रमशिला, विश्वविद्यालय, शिक्षा, पाठ्यक्रम, तिब्बत

प्रस्तावना

शिक्षा से मानव में ज्ञान उत्पन्न होता है। ज्ञान से मुक्ति प्राप्त होती है तथा मनुष्य जीवन में निपुणता प्राप्त करता है। शिक्षा के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति अपनी शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक शक्तियों का विकास कर इस संसार में और परलोक में जीवन के वास्तविक सुख को प्राप्त कर सकता है। प्राचीन काल में नालन्दा, विक्रमशिला, वल्लभी, ओदत्तपुरी आदि विश्व प्रसिद्ध विश्वविद्यालय थे।[1] भारत सांस्कृतिक इतिहास में विक्रमशिला एक अविस्मरणीय समय है। तारानाथ [2] के अनुसार आठवी शताब्दी में पालवंश के राजा धर्मपाल ने विक्रमशिला विहार की स्थापना की थी। [3] इतिहासकारों में मतभेद है कि विक्रमशिला वास्तव में कहां पर स्थित है, तिब्बती स्रोतों के अनुसार में पहाड़ी चट्टान के ऊपर गंगा नदी के तट पर मगध (बिहार) में बसा हुआ है। अलेक्जेण्डर कनिंघम [4] ने कहा कि ये एक गांव सिलाव के पास है जो बड़ागांव के समीप है। वहीं बनर्जी ने बताया कि हुसालगंज से तीन मील दक्षिण पूर्व में क्योर [5] स्थित है लेकिन दोनों स्थलों के समीप गंगा के न होने से उसके प्रमाणीकरण में शंका उत्पन्न होती है। राजेन्द्र लाल मित्रा [6] और सतीश चन्द्र विद्याभूषण ने पहचान की यह भागलपुर में सुल्तानगंज में स्थित है। नन्दलाल डे के अनुसार विक्रमशिला भागलपुर से 24 मील पूर्व पथरघाट में स्थित है। [8] पथरघाट कहलगांव की सीमा में आता है जो गंगा नदी के बांये तट पर स्थित है। एन0 पी0 चक्रवर्ती [9] ने विहार का क्षेत्र वटेश्वर और पत्थरघाट के समीप बताया है। हैमिल्टन [10] ने एंटीचक [11] गांव में मिले अवशेषों का निरीक्षण किया। ओल्डमैन पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने 1930 में एन्टीचक में मिले अवशेषों को विक्रमशिला विहार से जोड़कर देखा गया।

विक्रमशिला विश्वविद्यालय पूर्ण नियोजित व आवासीय था। जिसमें आजकल के संस्थान के समान छह कालेज या संस्थान थे जो एक केन्द्रीय हाल में छह फाटकों से सम्बद्ध थे। इस हाल को 'विज्ञान भवन' कहते थे। प्रत्येक महाविद्यालय में एक प्रवेश द्वार होता था तथा प्रत्येक प्रवेश द्वार पर एक-एक द्वार पण्डित बैठता था। द्वार पण्डित द्वारा परीक्षण किये जाने के बाद ही किसी विद्यार्थी का महाविद्यालय में प्रवेश सम्भव था। यहां निम्न द्वार पण्डितों के नाम हमें मिलते हैं। [12]

i). पूर्व द्वार-आचार्य रत्नाकर शान्ति
ii). पश्चिम द्वार-वागीश्वर कीर्ति (वाराणसेव)
iii). उत्तर द्वार-नरोष
iv). दक्षिण द्वार-प्रज्ञाकस्मति
v). प्रथम केन्द्रीय द्वार-रत्नव्रज (कश्मीरी)
vi). द्वितीय केन्द्रीय द्वार-ज्ञान श्रीमित्र (गौडीय)

विश्वविद्यालय में नालन्दा की भांति बहुत सम्पन्न पुस्तकालय भी थी। वहां पर व्याकरण, तर्कशास्त्र, दर्शन, न्याय, कला, आयुर्वेद और साहित्य की अलभ्य पुस्तकों का संग्रह था। यहां पर प्रारम्भिक बौद्ध दर्शन के साथ-साथ तन्त्रवाद पर भारी संख्या में संग्रह उपलब्ध था। [13] 400 वर्षों तक शिक्षा केन्द्र के रूप में इसमें अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की थी। तिब्बती विद्वानों के लिए एक अतिथि गृह था जहां तिब्बत से ज्ञान पाने के लिए भारतीय पण्डितों के चरणों में बैठकर अध्ययन करने आते थे। [14] बंगाल के राजा धर्मपाल ने विक्रमशिला को संरक्षण प्रदान किया और 108 उच्च अध्यापकों की नियुक्ति की और सैकड़ों सहायक अध्यापक थे। कुछ लोगों का मानना है कि 114 की नियुक्ति की। [15] छात्रों के लिए आवास और भोजन की व्यवस्था विश्वविद्यालय की ओर से की जाती थी। ऐसा प्रतीत होता है कि बारहवीं शताब्दी तक विक्रमशिला के विद्यार्थियों की संख्या 3000 तक हो चुकी थी। [16]

*Corresponding Author: डॉ0 अनिल कुमार यादव

आचार्य रत्नाकर शान्ति को पूर्वी द्वार पर द्वार पण्डित नियुक्त किया गया। इन्होंने ओदन्तपुरी विश्वविद्यालय से शिक्षा ग्रहण की थी, बाद में ये विक्रमशिला आ गये और वहां पर उन्होंने बौद्ध धर्म की शिक्षा दी और प्रचार-प्रसार किया। इन्हें महाचार्य की उपाधि दी गई थी। वागीश्वरकीर्ति विक्रमशिला विश्वविद्यालय के पश्चिमी तट के द्वार पंडित थे, ये बनारस के मूल निवासी थे, ये तारादेवी के उपासक थे और संस्कृत के तन्तविद्या का प्रचार किया। नारोपा, विक्रमशिला में कुछ समय शिक्षक थे। इसके पश्चात् इन्हें उत्तर द्वार पर द्वारपंडित नियुक्त किया गया। प्रज्ञाकश्मति, दक्षिण द्वार के द्वार पंडित है। इनमें अधिकांश तिब्बत के थे। तिब्बती छात्रों के आवास के लिये विश्वविद्यालय में एक विशिष्ट अतिथि गृह बनवाया गया था। विश्वविद्यालय का प्रबन्ध चलाने के लिए मुख्य संघाध्यक्ष की देख-रेख में एक परिषद थी जिसके सदस्य विभिन्न प्रशासनिक कार्यों जैसे नवागन्तुकों को दीक्षित करने, नौकरी की व्यवस्था तथा उनकी देखभाल, खाद्य सामग्री तथा ईधन की आपूर्ति, मठ के कार्यों का आवंटन आदि को सम्पन्न किया करते थे। शैक्षणिक व्यवस्था छह द्वारपण्डितों की समिति द्वारा ही संचालित होती थी। इस समिति का भी एक अध्यक्ष होता था। कालान्तर में विक्रमशिला विश्वविद्यालय की प्रशासनिक परिषद ही नालंदा विश्वविद्यालय का भी कार्य देखने लगी। यहां के स्नातकों को अध्ययनोपरान्त पाल शासकों द्वारा उपलब्धियां प्रदान की जाती थी। संभव है वहां आजकल की भांति दीक्षान्त समारोहों का आयोजन भी किया जाता रहा हो जिसमें समकालीन पाल शासक कुलाधिकपति की हैसियत से उपस्थित होते हो। तिब्बती स्रोतों से पता चलता है कि जेतारी तथा रत्नवज्र ने पाल राजाओं-महीपाल तथा कनक के हाथों से उपाधियां प्राप्त किया था। स्नातकों को 'पण्डित' की उपाधि दी जाती थी। महापण्डित उपाध्याय तथा आचार्य क्रमशः उच्चतर उपाधियां थी। यहां से नागार्जुन और अविश को सम्मान प्राप्त हुआ था। [17]

यहां शिक्षण का माध्यम संस्कृत भाषा थी। पाठ्य विषय मुख्यतः व्याकरण, तर्कशास्त्र, तन्त्रशास्त्र, वेद, उपनिषद् तथा दर्शनशास्त्र थे। विक्रमशिला को उत्तर भारत में तांत्रिक बौद्ध धर्म का गढ़ माना जाता था। यहां के आचार्य उच्च कोटि के तांत्रिक थे। महायान शाखा के माध्यमिक तथा योगाचार सिद्धान्तों के विभाग ख्याति प्राप्त थे। विक्रमशिला का पाठ्यक्रम जितना व्यवस्थित था, उतना अन्य किसी भारतीय विद्यापीठ का नहीं था। नारोपा ने अपने शिष्य रत्नाकर शान्ति को सिंघल में महायान की स्थापना के लिए भेजा था, जो कुछ समय तक विक्रमशिला के कुलपति थे। रत्नाकर शान्ति की गिनती चैरासी सिद्धों में होती थी। दीपंकर श्रीज्ञान का जन्म सन् 980 ई0 में हुआ था। इनका मूल नाम चन्द्रगर्भा था। ये जेतारि के शिष्य थे। ओदंपुरी विश्वविद्यालय के शिक्षक आचार्य शीलरक्षित ने इनका नाम दीपंकर श्रीज्ञान रखा। इन्हें 'दीपंकर आतिश' भी कहा जाता था। इनकी ख्याति 'गुच्छ ज्ञानवज्र' के नाम से भी थी क्योंकि ये तन्त्रशास्त्र के सिद्ध ज्ञाता थे। ग्यारहवीं शती में तिब्बती नरेश चनचुब के निमंत्रण पर वे तिब्बत गये। जहां उन्होंने बौद्धधर्म के सुधार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। तिब्बती स्रोत में उन्हें दो सौ ग्रन्थों की रचना का श्रेय दिया गया है। ये 1042 ई0 में नेपाल होते हुए तिब्बत गये। उनके साथ करीब तीन दर्जन विद्वान भी तिब्बत गये। आतिश अपने साथ 'लामावाद' को भी तिब्बत ले गये। अभयंकर गुप्त का नाम विक्रमाशील के प्रसिद्ध शिक्षकों में आता है। ये बंगाल के रहने वाले थे। राजा रामपाल के शासनकाल में ये विक्रमशिला में पढ़ाते थे। तन्त्र के ये महापण्डित थे। प्रजानकरामति विक्रमशिला के चैकीदार थे, इन्होंने कई पुस्तकें लिखी इनमें से दो तिब्बत में है। इन सबके अतिरिक्त वैरोचन, रक्षित, तथागत, रक्षित, जनाश्री, रत्नवज्र, वीर्यसिम्हा, रत्नाकीर्ति, शाक्यश्रीभद्र, जैतारी, ज्ञानपद आदि प्रमुख आचार्य एवं विद्वान थे। इस विश्वविद्यालय के अन्तिम आचार्य शाक्यश्रीभद्र थे।

1203 ई0 में बख्तियार खिलजी के नेतृत्व में विक्रमशिला विश्वविद्यालय को दुर्ग के भ्रम में ध्वस्त कर दिया। यहां के हजारों छात्रों और अध्यापकों का कत्ल कर दिया गया। इस समय कुलपति शाक्यश्रीभद्र थे। वे अपने कुछ अनुयायियों के साथ किसी प्रकार बचकर तिब्बत भाग गये। इस प्रकार गौरवशाली शिक्षण संस्थान का दुः खद अन्त हुआ।

निष्कर्ष

उपरोक्त वर्णन से प्रतीत होता है कि सातवीं शताब्दी में विक्रमशिला विश्वविद्यालय का महत्व बहुत बढ़ गया था और यह नालंदा तथा तक्षशिला विश्वविद्यालय के समकक्ष था। इस विश्वविद्यालय में चीन, तिब्बत, नेपाल आदि देशों के भी छात्र अध्ययन के लिए आते थे। अतः भारत की शिक्षा व्यवस्था विश्व के कोने-कोने में प्रचलित थी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मझिम निकाय, भाग-1, पृष्ठ 377।
2. तारानाथ 'हिस्ट्री आफ बुद्धिज्म इन इण्डिया' में प्रकाशित लेख।
3. वशिष्ट, जितेन्द्र कुमार, भारतीय शिक्षा का इतिहास, दिल्ली 2005, पृष्ठ 55।
4. आर्कियोलाजिकल सर्वे रिपोर्ट, 1862, कनिंघम, वाल्यूम-8, पृष्ठ 75।
5. क्योर, विक्रमशिला का पुरास्थल है, जर्नल आफ बिहार रिसर्च सोसाइटी 1929, वाल्यूम 15, पृष्ठ 269-76।
6. जर्नल आफ एशियाटिक सोसाइटी रिसर्चर्स, 1864, कलकत्ता, वाल्यूम-33, पृष्ठ 360-74।
7. जर्नल आफ एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल 1909।
8. पूर्ववत्
9. चैधरी, आर0के0, द यूनिवर्सिटी आफ विक्रमशिला विहार रिसर्च सोसाइटी, पटना, 1975, पृ0 3
10. हैमिल्टन-ऐज एकाउन्ट आफ द डिस्ट्रिक्ट आफ भागलपुर 1810-11, बिहार एण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी पटना, 1929, बी0एस0 वर्मा, फरदर एक्सकेवेशन्स ऐट एन्टीचक, जर्नल आफ बिहार पुराविद परिषद वाल्यूम-2, पृष्ठ 154-7, 1-97।
11. एन्टीचक गांव (कहलगांव रेलवे स्टेशन के समीप पत्थरघाट) भागलपुर।
12. विद्याभूषण, हिस्ट्री आफ इण्डियन लॉजिक, पृ0 52
13. मालती सारस्वत, नीता सिन्हा, मदन मोहन, भारतीय शिक्षा का इतिहास, इलाहाबाद, 2013 पृ0 60
14. दास, एस0सी0, इण्डियन पाण्डित्स इन दा लैण्ड आफ स्नो, कलकत्ता 1983, पृ0 58।
15. डी0जी0 ऐप्टे, युनिवर्सिटी इन एन्शियेंट इण्डिया, एजुकेशन एण्ड साइकोलाजी एक्सटेन्शन नं0 11, महाराजा सायाजीराव युनिवर्सिटी आफ बड़ौदा, पृष्ठ 47-48।
16. पूर्ववत्, पी0एन0 बोस, पृ0 127।